☆ मैं तुम्हें आवाज दे रहा हूं, मैं तुम्हारे दिल के द्वार पर दस्तक दिए जा रहा हूं इसलिए कि तुमसे कुछ वायदे किए हुए हैं, और इन वायदों को पूरा करना है।

☆ मैंने अपने हृदय के द्वार तुम्हारे लिए खोल रखे हैं। जिससे कि तुम आओ और बिना हिचकिचाहट के हृदय-द्वार के अन्दर पहुंच सको।

☆ पर विलम्ब न हो जाए, पहले ही बहुत अधिक देरी हो चुकी है। ऐसा न हो, कि तुम विलम्ब करो और दरवाजे बन्द हो जाएं।

☆ ऐसा न हो जाए, कि यह स्वर्णिम अवसर तुम्हें प्राप्त ही न हो। ऐसा न हो, कि जो सुगन्ध का झोंका तुम अभी अनुभव कर रहे हो, वह विलुप्त हो जाए।

☆ सैकड़ों वर्षों बाद ऐसा अवसर तुम्हारे जीवन में आया है, उठो, बढ़ो और मेरे हृदय-द्वार में प्रवेश कर जाओ।

☆ मेरे प्रवचन 'सुनने' के नहीं 'गुनने' के हैं, हृदय में उतारने के हैं, अपने रक्त में एकाकार कर देने के हैं, अपने व्यक्तित्व में एकरस कर देने के हैं।

☆ मेरे प्रवचन, शब्द जाल नहीं हैं, तुम्हें मिटा देने का अमोघ अस्त्र है, जब तुम मिटोगे तभी तो मैं तुम्हें महामानव बना सकूंगा।

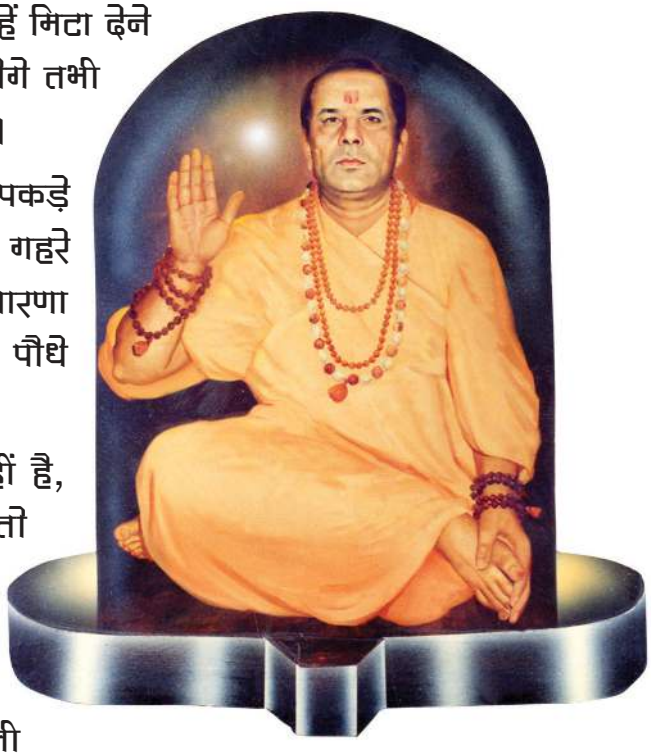

☆ मेरे प्रवचन 'क्रांति बीज' हैं, इन्हें पकड़े मत रखना, हृदय की मिट्टी में गहरे मिला देना, तभी तो ध्यान के, धारणा के, समाधि के सुन्दर, सुगन्धित पौधे विकसित हो सकेंगे।

☆ मेरे प्रवचन में गति है, विश्राम नहीं है, रुकने का स्थल नहीं है, यह तो तुम्हारे डगमगाते पैरों में गति देने की प्रक्रिया है, तुम्हारे तुतलाते शब्दों को दृढ़ता देने का आयाम है, तुम्हारे मुर्दा शरीर में संजीवनी देने की प्रक्रिया है।

☆ मेरे प्रवचन कान से सुनने के तथ्य नहीं, नाभि से गहरे उतारने के आयाम हैं, और जिस दिन तुम ऐसा कर दोगे, उस दिन तुम्हें 'बुद्धत्व' प्राप्त हो जाएगा।

☆ मुझे जो कहना था, वह काफी कुछ कह चुका। मुझे जो बताना था, वह काफी बता चुका। अब तुम्हारी जिम्मेवारी, तुम्हारा उत्तरदायित्व ज्यादा बढ़ गया है।

☆ अब मेरी जबान केवल मेरी ही नहीं रही, तुम सबकी जबानों में मेरी ही आवाज, मेरे ही शब्द ध्वनित हो रहे हैं, और अब मेरे प्रवचन केवल मेरे ही प्रवचन नहीं रह गए हैं, तुम सब के शब्द, ध्वनि और वाक् शक्ति में, मैं ही ध्वनित हो रहा हूं।

☆ अब मैं लाख-लाख रूपों में बंट गया हूं, अब मेरा शरीर केवल मेरा ही शरीर नहीं रह गया है तुम सबके शरीरों में मेरा शरीर बंट गया है।

☆ तुम्हारी जिम्मेवारी, तुम्हारा उत्तरादयित्व ज्यादा बढ़ गया है, कि अब मेरे संदेश को दूर-दूर तक तुम्हें ही पहुंचाना है। हवा के झोंके की तरह मेरी सुगन्ध लेकर चारों तरफ पूरे विश्व में फैल जाना है, और अब यह उत्तरदायित्व तुम्हारा है।

शिष्य धर्म

शिष्य और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी तराजू में तोला नहीं जा सकता। एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से विश्वास एवं निष्ठा बढ़ती है।

- विश्वसनीयता (Reliability) - कमिटमेंट से आती है और पहले से अंदाजा लगाने की क्षमता देती है।
- स्थिरता (Consistency) - विश्वास बढ़ाती है।
- सम्मान (Respect) - खुद के और दूसरों के प्रति शिष्टता और परवाह करने का भाव पैदा करता है।
- निष्पक्षता (Fairness) - न्याय और निष्ठा के भाव को जगाती है।
- खुलापन (Openness) - बिना संकोच के हर चीज के लिए खुला रास्ता।
- समता (Congruence) - कथनी और करनी में समानता आती है। अगर कोई कहता कुछ है और करता कुछ है तो उसका कैसे यकीन करेंगे?
- निपुणता (Competence) - काबिलियत और सेवा की भावना से यह गुण आता है।
- ईमानदारी (Integrity) - ईमानदारी विश्वास का महत्वपूर्ण अंग है।
- स्वीकृति (Acceptance) - सुधार के प्रयास के बावजूद हमें एक-दूसरे की कमियों और खूबियों को एक हद तक स्वीकार करने की जरूरत है।
- चरित्र (Character) - किसी इंसान में कितनी ही योग्यता क्यों न हो, लेकिन अगर वह चरित्रहीन है तो उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता।